राहुल अब सूरज पर थूकने लगे

बहुत शोर सुनते थे सीने में दिल का, जो चीरा तो इक कतर-ए-खूं न निकला। देश की राजनीति में राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी आदि जो विचित्र जीव आ गए हैं, उनमें राहुल गांधी, जिन्हें देश की जनता प्यार से पप्पू कहती है, सिरमौर हैं। पिछले कुछ दिनों से राहुल गांधी बड़े जोरशोर से कह रहे थे कि उनके पास एक ऐसा प्रमाण है, जिसका रहस्योद्घाटन वह करेंगे तो भूचाल आ जाएगा। वह बराबर आरोप लगा रहे थे कि इसीलिए उन्हें बोलने नहीं दिया जा रहा है। नेहरू वंश की जो अनेक परंपराएं रही हैं, उसी का अनुसरण करते हुए राहुल गांधी यह आरोप लगा रहे थे कि उन्हें बोलने नहीं दिया जा रहा है, जबकि देश में सबसे ज्यादा बोलने वाले नेता राहुल गांधी ही हैं। कांग्रेस ने लगातार व्यवधान डालकर तथा भयंकर शोर मचाते हुए संसद का पिछला शीतकालीन अधिवेशन नहीं चलने दिया था। उसने संसद का अधिवेशन शायद सिर्फ इसलिए नहीं चलने दिया था कि केंद्र सरकार आंगस्टा वेस्टलैंड विमानों की खरीद में सोनिया गांधी द्वारा किए गए भ्रष्टाचार का संसद में खुलासा करने वाली थी। संसद को कांग्रेस ने नहीं चलने दिया तथा सत्तापक्ष के लोगों को बोलने नहीं दिया गया, किन्तु राहुल गांधी एवं उनकी कांग्रेस पार्टी ने उलटा चोर कोतवाल को डांटे मुहावरे को चरितार्थ करते हुए सत्तापक्ष पर आरोप लगा दिया कि उन्हें बोलने नहीं दिया जा रहा है। इतिहास गवाह है कि, देश में सबसे अधिक बोलने वाले एवं अनर्गल बातें कहने वाले नेता राहुल गांधी हैं, जबकि उनके जोड़ीदार अरविंद केजरीवाल कुछ दिनों से कम बोल रहे हैं। अंततः राहुल गांधी ने वह रहस्योद्घाटन कर ही दिया, जिसके बारे में उनका कहना था कि वह बोलेंगे तो भूचाल आ जाएगा। किन्तु उनके बोलने एवं रहस्योद्घाटन पर भूचाल आना तो दूर, पत्ता तक नहीं हिला। उन्होंने आरोप लगाया है कि जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, उस समय वर्ष 2014 में छह महीने के भीतर उन्हें सहारा समूह ने नौ बार में कुछ 40 करोड़ रुपए दिए। राहुल गांधी के चाटुकार जो बातें उन्हें बता देते हैं, वह रट्टू तोते की तरह वही बोल दिया करते हैं। तभी तो उन्होंने यह गौर नहीं किया कि उनकी इस रहस्योद्घाटन की बातों के आधार पर ही आम आदमी पार्टी के नेता प्रशांत भूषण ने सर्वोच्च न्यायालय में वाद दाखिल किया था, जिसे सर्वोच्च न्यायालय प्रमाणहीन बताकर खारिज कर दिया तथा प्रशांत भूषण को फटकार भी पड़ी है। वस्तुतः राहुल गांधी के साथ समस्या यह है कि 60 साल तक कांग्रेस ने देश पर राज किया लेकिन अब कांग्रेस सत्ता से अलग है, और राहुल गांधी को राजपाट पुनः मिलने की कोई आशा नहीं दिखाई है, क्योंकि कांग्रेस लोकसभा में तो वह मात्र 44 सीटों में सिमटकर रह ही गई। वैसे सब समय-समय की बात है, कल किसने देखा है।

अन्ना की नजरों से गिरे केजरीवाल

अरविन्द केजरीवाल ने कुछ ही वर्षों में राजनीतिक ऊंचाइयों को छुआ है। वह दिल्ली के मुख्यमंत्री है। आम आदमी पार्टी के लगभग निरंकुश सुप्रीमो है, उनका विरोध करने वालों की पार्टी में कोई जगह नहीं होती, ऐसे लोगों को बाहर का रास्ता दिखाने के बाद ही केजरीवाल दम लेते है।

अर्थात् पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र भी उन्होंने खुद परिभाषित किया है। इसके पहले आंतरिक लोकपाल की दशा-दिशा का निर्धारण भी उन्होंने अपनी मर्जी से किया था। आंतरिक लोकपाल आज भी है, लेकिन क्या मजाल कि वह केजरीवाल की मर्जी के खिलाफ कुछ कर ले, जबकि अब तो ऐसे मामलों की भरमार है, जिनपर कम से कम आंतरिक लोकपाल को विचार अवश्य करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह कि अरविन्द केजरीवाल सत्ता व संगठन दोनों दृष्टियों से बहुत ताकतवर है। इतने कि प्रधानमंत्री से नीचे किसी की बात नहीं करते। देश में नरेंद्र मोदी पर निशाना लगाते घूम रहे हैं। ऐसा लगता है कि उनके पास नरेंद्र मोदी के अलावा दूसरा कोई मुद्दा ही नहीं बचा है। यहां तक कि उपराज्यपाल नजीब जंग से भी उनका कोई मतभेद या विवाद होता था, तब भी वह नरेंद्र मोदी पर ही निशाना लगाते थे। ऐसा लगता है कि केजरीवाल इन बयानों से वास्तव में अपना महत्व रेखांकित करना चाहते है, वह दिखाना चाहते है कि उनका मुकाबला केवल प्रधानमंत्री से है।

केजरीवाल अपनी राजनीतिक बुलंदी पर इतरा सकते है, लेकिन जिसके नाम का सहारा लेकर उन्होंने यह मुकाम हासिल किया, उसका विश्वास आज उनके साथ नहीं है। अन्ना हजारे को यह अनुमान नहीं रहा होगा कि अलग ढंग की राजनीति का दावा इस तरह रसातल में चला जाएगा। केजरीवाल इस ऊंचाई के बावजूद अन्ना की नजरों में बहुत नीचे पहुंच गए है। केजरीवाल को यह समझना चाहिए कि प्रधानमंत्री का विरोध करने मात्र से ही किसी नेता का स्तर वहां तक नहीं पहुंच जाता। ऐसा नहीं कि केजरीवाल की यह महत्वाकांक्षा अभी जागी है। पिछले लोकसभा चुनाव में वह इसी मानसिकता से प्रेरित होकर वाराणसी चुनाव लड़ने पहुंच गए थे। इस फैसले का दूसरा कोई मकसद नहीं था। केजरीवाल राष्ट्रीय स्तर पर अपना महत्व दिखाना चाहते थे। महत्वाकांक्षा गलत नहीं होती, लेकिन यह सब हवा-हवाई नहीं होना चाहिए। केजरीवाल ने ऐसा कोई काम नहीं किया, जिसके चलते, राष्ट्रीय स्तर पर उनका नेतृत्व स्थापित हो या मान्य हो सके। दूसरी ओर नरेंद्र मोदी ने दशकों तक निजी महत्वाकांक्षा से ऊपर उठकर समाज सेवा की है या इसी पृष्ठभूमि में उनके नेतृत्व को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकर किया गया। यह सही है कि उनको स्पष्ट बहुमत से जनादेश मिला। लेकिन केजरीवाल राष्ट्रीय स्तर की प्रमाणिकता बिना किसी ठोस आधार के प्राप्त करना चाहते हैं? अन्ना हजारे का नाम लेकर उन्होंने आम आदमी पार्टी का गठन किया। इसी आधार पर वह अलग ढंग की राजनीति का विश्वास दिला सके, लेकिन अब केजरीवाल की हकीकत सामने आ गई है। वह अलग ढंग की नहीं वरन् स्वार्थ पूर्ण राजनीति कर रहे थे, ऐसा लगता है। ये सच्चाई अन्ना हजारे के पत्र से आई। केजरीवाल के नाम अन्ना का पत्र वस्तुतः उनकी व्यथा व निराशा की अभिव्यक्ति है। वह लिखते हैं कि यदि व्यवस्था में परिवर्तन लाना है तो नेतृत्व को अपनी बात पर अमल करना चाहिए। अन्ना की इस बात से जाहिर है कि वह केजरीवाल को वादों पर अमल करने वाला नहीं मानते।

दूसरी बात अन्ना ने लिखी कि मैंने देश व समाज की बेहतरी के लिए महाराष्ट्र के लोगों के महत्वपूर्ण कार्य छोड़कर समय दिया। इस कथन का अर्थ है कि केजरीवाल ने अपने स्वार्थ व महत्वाकांक्षा के लिए महाराष्ट्र के बाहर अन्ना का उपयोग किया। इसके बाद अन्ना लिखते है कि मैने देश के लिए बड़ा सपना देखा था, लेकिन मेरा सपना चकनाचूर हो गया। इस कथन का मतलब है कि अन्ना अब केजरीवाल से पूरी तरह निराश हो गए है। उन्होंने अन्ना के साथ विश्वासघात किया है। फिर अन्ना लिखते हैं कि सामाजिक परिवर्तन की बात गौण हो रही है। राजनीति और धन महत्वपूर्ण हो रहा है। अन्ना के इस कथन में केजरीवाल की सम्पूर्ण शैली समाहित है। अन्ना आम आदमी को चंदा देने वालों का रिकार्ड सार्वजनिक न करने से भी निराश है।

जाहिर है अन्ना के इस पत्र से जहां उनकी उम्मीद टूटने का पता चलता है, वहीं केजरीवाल का असली राजनीतिक चेहरा भी सामने आ गया। अब कोई भी तथ्य अन्ना हजारे से छिपा नहीं है। यह भी साफ हुआ कि केजरीवाल ने अपनी सुनियोजित महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु अन्ना हजारे का उपयोग किया था। अन्ना ने ठीक कहा कि वह महाराष्ट्र के कार्यो में व्यस्त थे। इसका तात्पर्य है कि केजरीवाल और उनकी तरह एनजीओ चलाने वाले कतिपय लोग, उन्हें दिल्ली तक लेकर आए थे। अन्ना को भी लगा होगा कि आईआरएस की सेवा से त्यागपत्र देने वाले केजरीवाल में त्याग की भावना होगी। वह पद लिप्सा की राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र व समाज की सेवा करना चाहते हैं। यही सोचकर लगता है कि अन्ना ने दिल्ली आकर लोकपाल आंदोलन चलाना स्वीकार किया होगा। केजरीवाल ने बड़ी चतुराई से इस अवसर का लाभ उठाया था। वह अन्ना के सबसे करीब हो गए और अन्ना उनको समझ नहीं सके। केजरीवाल इस बहाने अपनी राजनीतिक जमीन तैयार कर रहे थे। सरकारी सेवा से त्यागपत्र वस्तुतः अधिक बुलंदी प्राप्त करने की सीढ़ी थी। केजरीवाल की नजर उसी पर थी। उन्होंने अपने को अन्ना हजारे का उत्तराधिकारी के रूप में पेश किया।

इसके बाद केजरीवाल खुलकर असली रंग में आ गए। उन्होंने राजनीतिक पार्टी बना ली। आंतरिक लोकपाल, मोहल्ला सभा, चंदा देने वालों की सूची सार्वजनिक करने जैसे बड़े-बड़े वादे किए। यह ऐलान किया कि प्रत्याशियों का चयन पूरा सर्वेक्षण करने के बाद होगा। अन्ना हजारे का नाम और इतने वादों से यह लगा कि केजरीवाल अलग ढंग की राजनीति शुरू करने जा रहे है। उन्होंने कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ मोर्चा खोला। लेकिन कुछ ही समय में केजरीवाल की कलई उतर गई। अन्ना ने इसी ओर इशारा किया है, उन्होंने साफ कहा कि धन और राजनीति ही महत्वपूर्ण हो गई। केजरीवाल ने अन्ना की विचारधारा को बहुत पहले छोड़ दिया। अलग राजनीति के अपने दावों को एक-एक कर खुद ही रौंद दिया। उनके मंत्री, विधायक के खिलाफ जैसे मामले सामने आ रहे है।

अधिकांश बच्चों को पसंद स्मार्टफोन से पढ़ाई

भारत के करीब 94 फीसदी विद्यार्थियों को स्मार्टफोन से पढ़ाई करना पसंद है। यह दावा एक अध्ययन के आधार पर ऑनलाइन शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने वाली कंपनी बायजू ने किया है। कंपनी का कहना है कि इससे छात्रों को जटिल अवधारणाओं को समझने, दूसरों की मदद लिए पढ़ने और अध्याय को जल्दी खत्म करने में सहूलियत मिलती है। कंपनी ने अपने स्मार्टफोन आधारित शिक्षण सामग्री 'के-12' एप का पढ़ाई पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित अध्ययन के आंकड़ों को जारी करते हुए कहा कि 97 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि वे शिक्षा से जुड़े एप के माध्यम से अपना पाठ जल्दी खत्म कर लेते हैं। 82 फीसदी अभिभावकों ने कहा कि एप की वजह से बच्चे स्वयं पड़ने को प्रेरित होते हैं। वहीं 93 फीसदी अभिभावकों का कहना है कि इससे उनके बच्चों के परिणामों में सुधार आया है। कंपनी के संस्थापक प्रवीण प्रकाश ने कहा कि तकनीक से बच्चों की पड़ाई के तरीकों में बदलाव आ रहा है।

साल 2017 में ग्रहण के चार गजब नजारे, भारत में दिखेंगे दो ग्रहण

नए साल 2017 में सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा की 'त्रिमूर्ति' दुनिया के खगोल प्रेमियों को ग्रहण के चार रोमांचक दृश्य दिखायेगी। हालांकि, भारत में इनमें से केवल दो खगोलीय घटनाओं के नजर आने की उम्मीद है। उज्जैन की प्रतिष्ठित जीवाजी वेधशाला के अधीक्षक डॉ. राजेंद्रप्रकाश गुप्त ने भारतीय संदर्भ में की गयी कालगणना के हवाले से बताया कि आगामी वर्ष में ग्रहणों की अद्भुत खगोलीय घटनाओं का सिलसिला 11 फरवरी को लगने वाले उपच्छाया चंद्रग्रहण से शुरू होगा। नववर्ष का यह पहला ग्रहण भारत में दिखायी देगा। उपच्छाया चंद्रग्रहण तब लगता है, जब चंद्रमा पेनुम्ब्रा (ग्रहण के वक्त धरती की परछाई का हल्का भाग) से होकर गुजरता है। इस समय चंद्रमा पर पड़ने वाली सूर्य की रोशनी आंशिक तौर पर कटी प्रतीत होती है और ग्रहण को चंद्रमा पर पड़ने वाली धुंधली परछाई के रूप में देखा जा सकता है। गुप्त ने बताया कि वर्ष 2017 में 26 फरवरी को वलयाकार सूर्यग्रहण लगेगा। हालांकि, सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा की लुकाछिपी का यह रोमांचक नजारा भारत में दिखायी नहीं देगा। तकरीबन दो सदी पुरानी वेधशाला के अधीक्षक ने बताया कि आगामी सात अगस्त को लगने वाले आंशिक चंद्रग्रहण का नजारा भारत में देखा जा सकेगा। गुप्त ने बताया कि आगामी 21 अगस्त को लगने वाले पूर्ण सूर्यग्रहण का दुनिया भर के खगोल प्रेमी इंतजार कर रहे हैं। बहरहाल, वर्ष 2017 का यह आखिरी ग्रहण भारत में नजर नहीं आयेगा। पूर्ण सूर्यग्रहण तब लगता है, जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चंद्रमा कुछ इस तरह आ जाता है कि पृथ्वी से देखने पर सूर्य पूरी तरह चंद्रमा की ओट में छिपा प्रतीत होता है।

सर्दियों के मौसम में गर्मी देने वाले तिलकुट

तिल और गुड़ को मिलाकर बनाये गये लड्डू मकर संक्रांति पर अवश्य बनाये जाते हैं। तिलगुड़ लड्डू को तिलकुटा भी कहा जाता है। ये लड्डू बनाने में बड़े ही आसान हैं और खाने में बहुत ही स्वादिष्ट।

आवश्यक सामग्री

तिल- 500 ग्राम (4 कप)

गुड़- 500 ग्राम (टूटा हुआ)

घी - 2 छोटी चम्मच

बनाने की विधि

तिल को अच्छी तरह साफ कर लीजिये। भारी तले की कड़ाई लेकर गरम कीजिये, मीडियम आग पर, लगातार चमचे से चलाते हुये, तिल को हल्के ब्राउन होने तक(तिल हाथ से मसले तो चूरा होने लगे) भून लीजिये।

तिल बहुत जल्द जल जाते हैं, ध्यान रहे कि तिल जले नहीं, जलने पर इनका स्वाद कड़वा हो जायेगा। भुने तिल से आधे तिल हल्का सा कूट लीजिये या मिक्सी से हल्का सा चलाकर दरदरा कर लीजिये। साबुत और हल्के कुटे तिल मिला दीजिये। गुड़ को तोड़कर छोटे छोटे टुकड़े कर लीजिये। कड़ाई में एक चम्मच घी डालकर गरम कीजिये, गुड़ के टुकड़े डालिये और बिलकुल धीमी आग पर गुड़ को पिघला लीजिये, गुड़ पिघलने पर आग तुरन्त बन्द कर दीजिये।

इन्हे भी देखिए

रसोई की छोटी छोटी समस्याएं और आसान समाधान पिघले गुड़ में भुने कुटे हुये तिल डालिये और अच्छी तरह मिलाइये। गुड़तिल के लड्डू बनाने का मिश्रण तैयार है।

हाथ से घी लगाकर चिकना कीजिये, मिश्रण से थोड़ा थोड़ा मिश्रण, लगभग एक टेबल स्पून उठाइये। लड्डू गरम मिश्रण से ही बनाने पड़ते हैं, मिश्रण ठंडा होने पर जमने लगता है और लड्डू बनाना मुश्किल होता है। गोल लड्डू बनाकर थाली में लगाइये, सारे मिश्रण से लड्डू बनाकर थाली में लगा लीजिये।

स्वास्थ्य के लिए अदरक के प्रमुख फायदे, इसे भी पढ़े

अदरक को सबसे अधिक स्वास्थ्यकर मसालों में से माना जाता है। इसमें पोषक तत्व और बायोएक्टिव यौगिक भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह हमारे शरीर और मस्तिष्क को बहुत लाभ पहुंचा है। वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार अदरक के 5 प्रमुख फायदे। अदरक में गिंजरोल पाया जाता है। इसमें पावरफुल मेडिटेशनल तत्व पाये जाते हैं। यह पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करता है। लार और पित्त के उत्पादन को बढ़ाता है।

गैस्ट्रिक के निदान में मदद करता है। अदरक जी मिचलाने को रोकने में असरदार साबित होता है। ऐसा माना जाता है कि यह गर्भवती महिलाओं के लिए फायदेमंद है यह मॉर्निंग सिकनेस को भी दूर करता है। सर्दी के मौसम में लोग अक्सर चाय से साथ इसका इस्तेमाल करते हैं। अदरक ठंड में शरीर को गर्म रखता है। अदरक पसीना लाने में मदद करता है। काम के दौरान शरीर को गर्म करता है। यह मसल्स पेन को 25 प्रतिशत कम करता है। यह मासिक धर्म के समय हो रहे पेन को कम करने में मदद करता है। यह सूजन और सूजन की स्थिति के इलाज में लाभदायक है।

राशिफल

मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। अच्छा जीवनस्तर प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे।

भाग्य साथ नहीं देगा। व्यापारिक निर्णय सोच समझ कर लें। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

आपके द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा होगी। मन में उत्साह रहेगा।

नवीन वस्तु क्रय कर सकते हैं। स्वाभिमान बना रहेगा। सुख सुविधा का लाभ लेंगे।

प्रतिष्ठा का ग्रॉफ ऊपर चढ़ेगा। जमीन जायदाद संबंधी मामलों का निपटारा होगा।

राजकीय मामलों में जीत हासिल होगी। मुनाफा बढ़ेगा। आर्थिक लाभ का मार्ग प्रशस्त रहेगा।

चोट लगने का भय रहेगा। वाहन सावधानीपूर्वक चलाएं। परिवार में मतभेद हो सकता है।

आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यस्तता रहेगी। यात्रा शुभ। महत्वपूर्ण फैसले लेंगे।

नवीन आय के स्रोतो में वृद्धि हो सकती है। परिवार का प्रेम प्राप्त होगा।

परिश्रम का अच्छा फल मिलेगा। परिवार के प्रति प्रेम बढ़ेगा। धैर्यपूर्वक कार्य लाभप्रद रहेंगे।

शत्रु परास्त होंगे। रुके कार्य गति पकडेंगे। सेहत उत्तम रहेगी। रोजगार के उचित अवसर मिलेंगे।

चिंताओं से राहत मिलेगी। कार्यक्षेत्र में वातावरण अनुकूल रहेगा।

शब्द सामर्थ्य - 03

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

1		2	■	3		4	■	5
	■	6			■	7		
8	9		■	10	11		■	
■		■	■	■		■	■	■
12		12ए	■	13		14	■	15
	■	16			■	17		
18	19		■	20	21		■	
■		■	■	■		■	■	■
22			■	23			■	24

हल-:शब्द सामर्थ्य - 02

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

सू-दोकू -03

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

हल-:सू-दोकू - 02

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2